Assessment for Learning C-9

System of Examination

परीक्षा प्रणाली

भारत में शिक्षा प्रणाली का प्रारम्भ लॉर्ड मैकाले द्वारा 1835 ई० में किया गया था।

परीक्षा प्रणाली की सहायता से छात्रों के अधिगम और शिक्षण की प्रगति तथा सफलताओं का मूल्यांकन किया जाता है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली के अवलोकन से यह स्पष्ट है कि इन उद्देश्यों की पूर्ति में शिक्षा का योगदान सही रहा है नहीं हो पाया है। अधिकांश विश्व-विद्यालयों में छात्रों का उद्देश्य शिक्षा ग्रहण करना कम तथा डिग्री प्राप्त करना अधिक है। वर्तमान परीक्षा प्रणाली में अधिक दोष पाया गया है।

वर्तमान परीक्षा प्रणाली के दोष

Demerits of Present Examination system.

वर्तमान परीक्षा प्रणाली के निम्नलिखित दोष हैं।

(1) वर्तमान परीक्षा प्रणाली के अवलोकन से पता चलता है कि परीक्षा

Assessment for Learning (C-9)

Date
Page

सम्पूर्ण कराने में सत्र का अधिकांश समय व्यतीत हो जाता है।

(2) परीक्षार्थी पूरे शैक्षिक सत्र में ज्ञान प्राप्त करने में रुचि नहीं दिखाते वे परीक्षा उत्तीर्ण करना अधिक महत्वपूर्ण समझते हैं।

(3) वर्तमान परीक्षा प्रणाली में छात्रों को प्रश्न-पत्र हल करने की अनावश्यक छूट दी जाती है जिससे परीक्षा उत्तीर्ण करना सरल हो जाता है।

(4) वर्तमान परीक्षा प्रणाली में परीक्षक को पूरे सत्र में उत्तर पुस्तिका का मूल्यांकन करने में अधिक समय लगता है जिसके कारण सभी विश्वविद्यालयों में शिक्षा सत्र का अधिकांश भाग परीक्षाओं को सम्पन्न करने में व्यतीत हो जाता है।

(5) एक विषय के प्रश्न-पत्र में जो प्रश्न पूछे जाते हैं वह प्रश्न सम्पूर्ण पाठ्यक्रम के सभी पक्षों का प्रतिनिधित्व नहीं करते, अतः जो परीक्षा होती है वह परीक्षार्थी के सम्पूर्ण पाठ्यक्रम के ज्ञान का मूल्यांकन नहीं करता है।

शैक्षिक सत्र के अन्त में सम्पन्न कराई जाती है जिससे छात्रों का सही मूल्यांकन नहीं हो पाता है अतः परीक्षाएं वर्ष के अन्त में न कराकर वर्ष में दो या तीन बार कराना चाहिए।

(2) वर्तमान परीक्षा प्रणाली में प्रायः ~~बाह्य~~ बाह्य परीक्षकों से मूल्यांकन कार्य कराया जाता है। ये परीक्षक छात्रों के शैक्षिक स्तर और शैक्षिक उपलब्धियों पूर्णरूप से जान नहीं पाते हैं अर्थात ये परीक्षक छात्रों के शैक्षिक स्तर तथा शैक्षिक उपलब्धियों के बारे में ~~कुछ~~ ~~जान~~ परिचित ~~हो~~ नहीं हो पाते हैं।

परीक्षक

अतः इसे दूर करने के लिए बाह्य मूल्यांकन के साथ-साथ आन्तरिक मूल्यांकन को भी ~~उचित~~ महत्व देना चाहिए।

(3) वर्तमान परीक्षा प्रणाली में अधिकांश परीक्षाएं लिखित रूप में होती हैं कुछ विषयों में प्रयोगात्मक परीक्षाएं एवं कुछ मौखिक परीक्षाएं भी होती हैं अतः केवल लिखित

Scanned by CarbonScanner

(C-9)

(6) वर्तमान परीक्षा प्रणाली में अधिकांश प्रश्न निबंधात्मक प्रकार के होते हैं। इन प्रश्नों का मूल्यांकन का अंकन करते समय परीक्षक के मनोभावों तथा आत्मनिष्ठ भावनाओं का अंकन पर प्रभाव पड़ता है जिससे अंकन त्रुटिपूर्ण हो जाता है।

(7) वर्तमान परीक्षा प्रणाली में निबंधात्मक प्रकार के प्रश्न-पत्रों की विश्वसनीयता और वैधता कम होती है।

(8) वर्तमान परीक्षा प्रणाली में नकल, परीक्षकों को प्रभावित करना और प्रश्न-पत्रों को आउट करने जैसे भ्रष्ट तरीके बढ़ते जा रहे हैं। अतः वर्तमान परीक्षा प्रणाली में अनेक प्रकार के दोष पाया जाता है।

वर्तमान परीक्षा प्रणाली में सुधार

Improvement in Present Examination System:

वर्तमान परीक्षा प्रणाली में सुधार निम्न प्रकार से किया जा सकता है।

(1) वर्तमान परीक्षा प्रणाली में परीक्षाएं

परीक्षाओं से छात्रों के मौखिक
और मौखिक उपलब्धियों का मूल्यांकन
सही ढंग से नहीं हो पाता
है। अतः लिखित परीक्षा के साथ-
साथ प्रयोगात्मक परीक्षाओं को
महत्व देना अति आवश्यक है।

(4) वर्तमान परीक्षा प्रणाली में अधिकांश
निबन्धात्मक प्रश्न पूछे जाते हैं
जिसके कारण छात्र चयनित अध्ययन
करता है, छात्र अपने पाठ्यक्रम को
पूरी तरह से तैयार नहीं करता है।
अतः इस दोष को दूर करने के
लिए निबन्धात्मक प्रश्नों के साथ-
साथ उचित संख्या में लघु उत्तरीय
तथा वस्तुनिष्ठ प्रश्नों को सम्मिलित
करना चाहिए।

(5) वर्तमान परीक्षा प्रणाली केन्द्रित होकर
रह गई है जिसमें एक छात्र ज्ञान अर्जित
करने की अपेक्षा परीक्षा उत्तीर्ण करना अधिक
महत्वपूर्ण समझता है। अतः सेमेस्टर
प्रणाली तथा ग्रेड प्रणाली अपनाकर छात्रों
को इस बात के लिए उत्साहित
करना चाहिए कि वह ज्ञान अर्जित
करने पर अधिक ध्यान दे।

Date ______
Page ______

(6) इस प्रणाली में छात्रों को अनेक प्रश्नों में से कुछ प्रश्न ही हल करने को दिया जाता है। इससे प्रश्न-पत्र के अनेक प्रश्नों को छोड़ने की छूट दी जाती है। जिसके कारण पूरा पाठ्यक्रम पूर्ण नहीं हो पाता है। अतः परीक्षा में छात्रों को प्रश्नों के चयन में कोई छूट नहीं देना चाहिए।

(7) इस प्रणाली में छात्र पाठ्यक्रम रटकर परीक्षा में सफल हो जाता है जिससे उनमें ज्ञान का विकास नहीं हो पाता है। अतः इस दोष को दूर करने के लिए पूरे सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से अधिक संख्या में प्रश्नों को सम्मिलित करना चाहिए।

(8) इस प्रणाली में सम्पूर्ण पाठ्यक्रम का प्रतिनिधित्व प्रश्न-पत्रों द्वारा नहीं हो पाता है। अतः प्रश्नों की संख्या बढ़ा देना चाहिए।

(9) इस प्रणाली में उत्तर पुस्तिकाओं के मूल्यांकन में परीक्षक के पक्षपातों का प्रभाव पड़ने की सम्भावना रहती है। अतः इसे दूर करने

के लिए वस्तुनिष्ठ प्रश्नों की संख्या बढ़ाई जानी चाहिए। वस्तुनिष्ठ प्रश्नों का मूल्यांकन ~~कम्प्यु~~ कम्प्यूटर द्वारा ~~किया~~ किया जाता है अतः पक्षपात रहित मूल्यांकन सम्भव है।

(10) वर्तमान परीक्षा प्रणाली की ~~विश्वसनीयता~~ विश्वसनीयता और वैधता पर प्रश्नचिन्ह लगा हुआ है इसकी विश्वसनीयता एवं वैधता बढ़ाने के लिए कम्प्यूटर का प्रयोग करना चाहिए।

Scanned by CarbonScanner